

“सिंध पर अरब आक्रमण एक घटना मात्र थी” इस कथन की समीक्षा करें।

DATE _____
PAGE _____

DATE _____
PAGE _____

प्रसिद्ध इतिहासकार हेग महोदय का कथन है कि “भारतीय इतिहास में अरबों की सिंध विजय एक गौण और महत्वहीन घटना थी” इस विशाल देश का एक सीमान्त प्रदेश (सिंध) ही इस घटना से थोड़ा बहुत प्रभावित हुआ। घटना के दूरगामी प्रभाव नहीं पड़े एवं लैनपूल के अनुसार “अरबों की सिंध विजय इस्लाम तथा भारत के इतिहास में एक साधारण घटना थी यह एक ऐसी विजय थी जिसका कोई गहरा परिणाम नहीं हुआ।” इस प्रकार हेग महोदय के विचार लैनपूल के विचार की तरह हैं। कुछ इसी प्रकार का विचार इतिहासकार टॉड महोदय का भी है।

अतः स्वभाविक प्रश्न उठता है कि अरबों की असफलता के क्या कारण थे जिनसे सिंध पर उनकी विजय अरब और भारत में घटना मात्र (Episodic) रह गई। इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं।

मुहम्मद बिन कासिम का असामयिक देहान्त — सिंध विजेता कासिम के असामयिक निधन के पश्चात् अरबी सैनिकों का उत्साह भंग हो गया। कासिम ने मुल्तान विजय के उपरान्त अपने एक सैनानायक को कन्नौज जो उत्तर भारत का मुख्य राजनीतिक केन्द्र था विजय के लिए भेजा। कासिम का कन्नौज अभियान असफल रहा। इस बीच कासिम का भी दर्दनाक अंत हो गया। सैनिकों का जोश ठंडा पड़ गया और साम्राज्य विस्तार की भावना मर गई। फलतः अरब आक्रमणकारी सिंध से आगे न बढ़ सके।

सिंध की आर्थिक विपन्नता — सिंध मरुस्थल था जहाँ विजेताओं को कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं हो सका। साथ ही जलमाव, उत्तम फल, मेवे आदि के अभाव में आक्रमणकारियों के जोश ठंडे पड़ गये। उन्होंने गलत रास्ते से भारत में प्रवेश किया था। सिंध भारत का एक सीमान्त प्रदेश था जिसे आधार बनाकर दूसरे प्रदेशों पर सफलतापूर्वक

आक्रमण नहीं किया जा सकता था। यही कारण था कि अरबों के बाद अन्य मुस्लिम आक्रमणकारियों ने खैबर के दर्रे से भारत में प्रवेश किया।

खलीफाओं की उदासीनता — कासिम के निधन के पश्चात् खलीफाओं ने अरब सैनिकों को सहायता देना बन्द कर दिया। कारण यह था कि सिंध विजय से कोई विशेष आर्थिक लाभ की सम्भावना नहीं थी। अतः सिंध विजित अरबी सुबेदारों को अपने ऊपर निर्भर रहना पड़ा। फलतः, वहाँ शासन शिथिल पड़ गया। खलीफाओं के पारम्परिक संघर्ष ने भी भारत-विजित अरबी शासन व्यवस्था को नुकसान पहुँचाया। उमैय्यद वंश एवं अब्बासीद वंश के खलीफाओं के बीच संघर्ष ने आपसी घरेलू संघर्ष में भारत के तरफ ध्यान देने का मौका न दिया।

शक्तिशाली राजपूतों का विरोध — लैनपूल के विचार में अरबों की सफलता का प्रमुख कारण शक्तिशाली राजपूतों का विरोध था। उत्तर भारत में शक्तिशाली राजपूत राज्य थे। राजपूत बिना भीषण संग्राम किए एक इंच भूमि देने को तैयार न थे। प्रसिद्ध इतिहासकार एलफिन्स्टन ने भी इस विचार का समर्थन किया है।

श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति — हिन्दू संस्कृति श्रेष्ठ थी। भारत का दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित, साहित्य आदि उन्नत वस्त्रा में थे। दूसरी ओर अरबों में कोई ऐसी आकर्षण विद्या नहीं थी जिससे भारतवासी उनकी ओर आकृष्ट हों। इसके विपरीत अरबवालों ने ही भारत से कुछ सीखा। भारत में पंडितों या पुरोहितों का आम जनता पर विशेष प्रभाव था। वे विदेशी सभ्यता संस्कृति के निन्दक थे। वे विदेशी आक्रमणकारियों को म्लोच्छ कहते थे। वे अरबों से घृणा करते थे। वे उनकी सभ्यता संस्कृति की अज्ञात समझते थे। फलतः अरबों के असभ्य आतिक्रमण से हिन्दू समाज सर्वथा अपरिवर्तित रहा।

इस्लाम की कटुता - इस्लाम धर्म के प्रचारक

तलावार की ताकत से आगे बढ़ते थे। काशिम ने हजारों हिन्दुओं का कत्लेआम करवाया जिन्होंने इस्लाम धर्म उंगीका करने से इनकार किया था। ऐसे निर्दयी विजेताओं को सभी हेम दृष्टि से देखते थे। अतः उसका शासन-प्रबन्ध कभी रक्षायी नहीं हो सकता था।

सुहृद् शासन का अभाव - अरब और सिंध के बीच

काफी दूरी थी। आवागमन के तीव्र साधनों के अभाव में सिंध में सुहृद् शासन स्थापित करना कठिन हो गया। बगदाद में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण सिंध के साथ दानिष्ठ संबंध स्थापित किया जा सका। अरब लोग अन्य मुसलमानों की तरह विजेता ही थे। उनमें शासन करने की योग्यता नहीं थी। उन्होंने सिंध में एक शिथिल और अस्थायी शासन व्यवस्था की नींव डाली। वे बहुसंख्यक हिन्दुओं को अपनी ओर मिलाने में असफल रहे। अतः उनकी शासन व्यवस्था अधिक दिनों तक नहीं टिक सकी।

तुर्कों का उत्कर्ष - तुर्कों के उत्कर्ष ने अरब

साम्राज्य को राहु की तरह ग़स लिया। खलीफाओं का प्रभुत्व जाता रहा। वे केवल धर्म गुरु ही बनकर रह गये। उनका संबंध सिंध से टूट गया। 874 ई० में सिंध के सूबेदार खलीफा के नियंत्रण से स्वतंत्र हो गए। कुछ वर्षों के बाद भारत में तुर्कों का प्रवेश हुआ जिन्होंने द्रुतगति से भारत के विभिन्न भागों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि अरब सिंध विजय भारत और अरब के इतिहास में एक घटना मात्र थी। इसके राजनीतिक और सांस्कृतिक परिणाम

विशेष महत्वपूर्ण साबित नहीं हुए। सिंध में अरब साम्राज्य के विघटन-भिन्न होने के तीन सौ वर्षों बाद गजनी के सुल्तानों द्वारा भारत - विजय की योजना बनी। अतएव अरबों की हिंदू विजय का सम्बन्ध तुर्कों के भारत आक्रमण से जोड़कर भारत में इस्लामी राज्य के शाश्वत सम्बन्ध को नहीं बतलाया जा सकता।

आपस में एक-दूसरे से

— प्रकट एक कि